हिन्दी सामान्य

प्रस्तावना :—

हिन्दी सामान्य का अध्ययन उन छात्रों को करना होता है जो इसे द्वितीय भाषा के रूप में स्वीकार करते हैं। हमारा देश बहुभाषी (हिन्दी, अँग्रेजी, मराठी, उर्दू, गुजराती आदि भाषा) है। अतः यहाँ राष्ट्र भाषा हिन्दी के अतिरिक्त अपनी मातृभाषा का अध्ययन करने वालों को राष्ट्रीय एकता के सूत्र में पिरोने के लिए द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी का अध्ययन कराया जाता है।

इस स्तर के छात्रों को हिन्दी भाषा की विशेषताओं से परिचित कराना अत्यंत आवश्यक होगा। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए पाठ्य पुस्तक में सरल तथा रोचक एवं शिक्षाप्रद पाठों को समाहित किया जाए। इससे उन्हें शैलीगत विशेषताओं का परिचय तो मिलेगा ही साथ ही वे ज्ञानवर्धक उत्तम एवं रोचक साहित्य का रसास्वादन करने में भी समर्थ हो सकेंगे।

शिक्षण के उद्देश्य —

(1) भाषा की ग्रहणशीलता —

- शुद्ध, सरल, स्पष्ट और प्रभावशाली भाषा में व्यक्त विचारों को सुनना और पढ़ना।
- विभिन्न भाषा शैलियों से परिचय।
- मानक भाषा से परिचय।
- प्रसंगानुकूल भाषा प्रयोग करने की क्षमता का विकास।
- साहित्य के माध्यम से भाषानुभूति और रसानुभूति का विस्तार।
- भाषिक पहचान, तुलना, विश्लेषण और संश्लेषण।

(2) अभिव्यक्ति —

- शुद्ध, सरल, स्पष्ट और प्रभावशाली भाषा में सुनकर तथा पढ़कर अपने विचार अभिव्यक्त करना।
- साहित्य की विविध विधाओं के स्वरूप का ज्ञान तथा उसका यथा स्थान समुचित प्रयोग।
- साहित्य के मूल्यांकन की क्षमता का विकास।

(3) अभिवृत्ति में परिवर्तन —

- साहित्य की विभिन्न विधाओं के माध्यम से उनमें राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना का विकास।
- साहित्य के माध्यम से सद्वृत्तियों — आस्था, प्रेम, देशप्रेम, मानव—प्रेम, सहृदयता, संवेदना का विकास।
- नाटक/एकांकी के माध्यम से जीवन की विभिन्न स्थितियों से परिचय कराना तथा तद्नुसार प्रेरणा देना।
- आँचलिक साहित्य और साहित्यकारों का परिचय एवं उनका महत्व समझना।

(4) सृजनशीलता को प्रोत्साहन –

- अपने भावों, विचारों की मौलिक अभिवृत्ति की क्षमता का विकास।
- भावानुकूल भाषा प्रयोग करने की क्षमता।
- कल्पना के माध्यम से विचारों को नया रूप देने की क्षमता का विकास।
- साहित्य के माध्यम से कविता, कहानी, संवाद, गीत आदि के मौलिक सृजन की प्रेरणा।

शिक्षण युक्तियाँ –

मातृभाषा के साथ–साथ द्वितीय भाषा के अध्ययन को और अधिक रोचक और आकर्षक बनाने के लिए भी शिक्षण युक्तियों का अत्यधिक महत्व है क्योंकि ये पाठ को सरस और रोचक तो बनाती ही हैं साथ ही भाषा को समझने, अभिव्यक्त करने और आनन्द लेने में भी सहायक होती हैं।

शिक्षण युक्तियों के सहज प्रयोग से भाषायी कुशलता का विकास होता है तथा प्रवाहपूर्ण भाषा का प्रयोग करने में सहायता मिलती है। शिक्षण युक्तियों के प्रयोग से छात्रों को विकास के अवसर मिलते हैं, इनका दृष्टिकोण विस्तृत होता है तथा उनमें नई सूझ–बूझ विकसित होने की अधिक सम्भावना बढ़ती है, जिससे वे साहित्य की ओर प्रेरित होते हैं। शिक्षण को रोचक बनाने के लिए यथास्थान आँचलिक भाषाओं (छात्र जिस क्षेत्र की लोकभाषा से सम्बन्धित हैं) के शब्दों, कहानियों, गीतों, चुटकुलों आदि का समायोजन अपेक्षित है।

पाठ्यसामग्री –

इस पाठ्यपुस्तक के माध्यम से छात्रों को हिन्दी भाषा और हिन्दी साहित्य के विकास की विभिन्न धाराओं का परिचय देना है। साथ ही सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक स्थितियों का ज्ञान कराते हुए उन्हे वर्तमान वैज्ञानिक, तकनीकी तथा संचार माध्यम की भाषा के प्रयोग में सक्षम बनाना है।

मध्यप्रदेश की संस्कृति की विविधता तथा इतिहास की गौरवगाथाओं के महत्व को देखते हुए मध्यप्रदेश के साहित्यकारों की विशिष्ट रचनाओं को समाहित करना अपेक्षित होगा।

इस पुस्तक में लगभग 20 पाठ प्रस्तावित हैं। आवश्यकता एवं स्तर के अनुरूप परिवर्तन सम्भव है।

हिन्दी सामान्य

कक्षा – 11

समय – 3 घण्टे **पूर्णांक – 100**

क्रम	विषय सामग्री	अंक	कालखण्ड
01	**पद्य खण्ड** – व्याख्या, सौन्दर्य बोध, विषय वस्तु से संबंधित प्रश्न	25	40
02	**गद्य खण्ड** – अर्थग्रहण संबंधी, बोधात्मक प्रश्न	25	40
03	**हिन्दी साहित्य का इतिहास** – कहानी एवं एकांकी का विकास क्रम	05	10
04	**व्याकरण** – भाषा बोध – शब्द, वाक्य, भाव पल्लवन, मुहावरे/लोकोक्तियाँ	20	30
05	**अपठित बोध** – पद्यांश–शीर्षक, सारांश एवं प्रश्न 05 गद्यांश – शीर्षक, सारांश एवं प्रश्न 05	10	15
06	**पत्र लेखन/प्रपत्र लेखन**	05	10
07	**निबन्ध लेखन**	10	15
	पुनरावृत्ति		20
	योग	**100**	**180**

पाठ्यपुस्तक – मकरन्द (गद्य,पद्य संकलन)

पद्य खण्ड –

पद्य पाठों पर आधारित दो में से किसी एक पद्यांश की सन्दर्भ प्रसंग सहित व्याख्या	05	**25**
सौन्दर्य बोध पर प्रश्न	10	
कविता की विषय वस्तु से सम्बन्धित लघूत्तरीय प्रश्न	10	

गद्य खण्ड –

गद्य पाठों पर आधारित अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न	10	**25**
गद्य पाठों की विषय वस्तु पर आधारित बोधात्मक प्रश्न	15	

हिन्दी साहित्य का इतिहास –

कहानी एवं एकांकी विकास क्रम पर प्रश्न (परिभाषा, तत्व एवं विकास) **05**

व्याकरण –

भाषाबोध

शब्द निर्माण – (उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, समास) पर आधारित प्रश्न	02	**20**
समोच्चारित भिन्नार्थक शब्द पर आधारित प्रश्न	02	
अनेकार्थी शब्द पर आधारित प्रश्न	02	
विलोम शब्द पर आधारित प्रश्न	02	
पयार्यवाची शब्द पर आधारित प्रश्न	02	
वाक्यांश के लिए एक शब्द पर आधारित प्रश्न	02	
भाव पल्लवन/भाव विस्तार पर आधारित प्रश्न	02	
वाक्य – अशुद्धि संशोधन पर आधारित प्रश्न	02	
वाक्य परिवर्तन पर आधारित प्रश्न	02	
मुहावरे/लोकोक्तियाँ पर आधारित प्रश्न	02	

अपठित बोध –

एक गद्यांश – शीर्षक सारांश एवं प्रश्न	05	**10**
एक पद्यांश – शीर्षक, सारांश एवं प्रश्न	05	

पत्र लेखन एवं प्रपत्र पूर्ति –

पत्र–आवेदन पत्र, शिकायती पत्र, कार्यालयीन एवं व्यावहारिक पत्र लेखन **05**

प्रपत्र–(प्रयोजन मूलक)–बैंक, डाकखाने, तार, तथा रेलवे आरक्षण आदि के प्रपत्र भरना

निबन्ध लेखन –

विचारात्मक, भावात्मक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं समसामयिक विषयों पर निबंध लेखन **10**

प्रायोजना कार्य–

1) क्षेत्रीय बोली–पहेलियाँ, चुटकुले, लोकगीत, लोक कथाओं का परिचय तथा खड़ी बोली में उनका अनुवाद।
2) दूरदर्शन/आकाशवाणी के कार्यक्रम पर प्रतिक्रियाएँ/विश्लेषण।
3) हिन्दी साहित्य का स्वतंत्र पठन/टिप्पणी एवं प्रेरणाएँ।
4) हस्त लिखित पत्रिका तैयार करना।
5) म.प्र. से प्रकाशित होने वाली हिन्दी भाषा की पत्र पत्रिकाओं की जानकारी।

टिप्पणी–

प्रायोजना कार्य से सम्बन्धित विषय वस्तु पर(अंक आवंटित न होने के कारण) परीक्षा में प्रश्न पूछे जाना अपेक्षित नहीं है।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक - ''मकरंद'' (गद्य-पद्य संकलन)

निर्माण एवं संकलन मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल

प्रकाशक मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम भोपाल